Dainik Jagran / 11.8.19 / P.9

प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में होना जरूरी : धर्मेंद्र पारे

साहित्य अकादमी की ओर से आयोजित अखिल भारतीय आदिवासी लेखक उत्सव के समापन दिवस पर रचना पाठ करते आदिवासी भाषाओं के लेखक ● जागरण

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: साहित्य अकादमी द्वारा 'अंतरराष्ट्रीय आदिवासी भाषा वर्ष' के अवसर पर आयोजित दो दिवसीय 'अखिल भारतीय आदिवासी लेखक उत्सव' का शनिवार को समापन हो गया। दूसरे दिन के पहले सत्र में के. वासमल्ली की अध्यक्षता में लेखक धर्मेंद्र पारे, सृजन सुब्बा, अमल राभा व सुबोध हांसदा ने आलेख प्रस्तुत किए।

धर्मेंद्र पारे ने कोरकू भाषा के बारे में बताते हुए कहा कि कोरकू का मतलब 'मनुष्य' है। उन्होंने कोरकू भाषा के कई शब्दों की समानता की 'हो' आदि भाषाओं से तुलना करते हुए कहा कि उनके कई शब्द एक समान हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि हमारी देशज भाषाएं तभी बच पाएंगी जब हम प्रारंभिक शिक्षा कम से कम तीन वर्ष मातृभाषा में करवाएं। सत्र की समाप्ति पर दिए वक्तव्य में के.वासमल्ली ने तमिलनाडु की तोडा जनजाति और उसकी भाषा के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि इनका साहित्य केवल वाचिक रूप में ही उपलब्ध है। इन सभी भाषाओं का उत्थान तभी होगा जब नई पीढ़ी में इनके प्रति लगाव उत्पन्न होगा।

महादेव टोप्पो की अध्यक्षता में आयोजित कविता पाठ सत्र में उत्तरा चकमा, अंजनी मारकम, पूर्णिमा सरोज, एस दखार, हर्षल वतुजी गेडाम व सोमा सिंह मुंडा ने रचनाएं प्रस्तुत कीं। कहानी-पाठ सत्र की अध्यक्षता मदन मोहन सोरेन ने की और इस सत्र में पाइक्रे चंपिया, श्रीकृष्ण जी काकड़े, बीरेंद्र सोय व चारु मोहन राभा ने कहानियां प्रस्तुत कीं। समारोह का अंतिम सत्र कविता पाठ का था जिसकी अध्यक्षता वसंत निरगुणे ने की। इस सत्र में देश भर से पधारे भूटिया, देहवाली, लेप्चा, लिंबू, मोनपा, राजबोंगशी, राठवी और सोलिगा आदि भाषाओं के कवियों ने अपनी रचनाएं प्रस्तुत की। साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक के वक्तव्य से समारोह का समापन हुआ।